

भारत में कामकाजी महिलाएं और निर्णयन क्षमता: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्राप्ति: 20.08.2026

स्वीकृत: 12.09.2026

61

डॉ० सीमा रानी

एसोसिएट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग)

राजकीय महाविद्यालय, जहाँगीराबाद, बुलन्दशहर उ०प्र०

ईमेल: seema.kota23@gmail.com

सारांश

स्त्री सम्पूर्ण पृथ्वी पर समाज के निर्माण व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। प्राचीन युग से वर्तमान युग तक महिलाओं की उपस्थिति, उनके कार्य व समाज के निर्माण व विकास में उनकी भूमिका को नहीं नकारा जा सकता। वर्तमान में महिलाएं घर से लेकर बाहर तक के विभिन्न कार्य क्षेत्रों में अपनी सफलता के नवीन आयाम स्थापित कर रही हैं, लेकिन इतनी सफलता के बाद भी आज भी वह पुरुषों के समकक्ष नजर नहीं जाती हैं। कार्यक्षेत्र में मजबूत निर्णय देने वाली यही महिलाएं पारिवारिक क्षेत्र में काफी पीछे नजर आती हैं। जहाँ अंतिम निर्णय परिवार के मुखिया अर्थात् पति या परिवार के पुरुष का होता है।

जैसा की पूर्ण विदित है कि किसी भी राष्ट्र के निर्माण व विकास में पुरुषों के साथ साथ महिलाओं का भी योगदान रहा है। अतः जहाँ आज वह हर क्षेत्र में सक्षम हैं तो पारिवारिक क्षेत्र में उनकी उपस्थिति द्वितीय स्थान पर क्यों है ? इसके लिए किसी सरकारी योजना या नियमों को बनाने की नहीं, बल्कि उनके प्रति समाज की सोच को, विचाराधारा को बदलना आवश्यक है।

मुख्य शब्द

महिलाएं, विकास, निर्णय, प्रस्थिति, समाज, विचाराधारा।

प्रस्तावना

भारत जैसे विकसित देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं जैसे औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण व नगरीकरण ने परिवर्तन में मुख्य भूमिका निभायी है। इन सबके अतिरिक्त सबसे मुख्य भूमिका शिक्षा की रही है। शिक्षा, समानता व स्वतंत्रता के संवैधानिक अधिकारों ने जहाँ समाज के हर वर्ग के व्यक्ति की प्रस्थिति में परिवर्तन किया वहीं भारत की महिलाएं भी इससे

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of Shodhmanthan.*

अछूती नहीं रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात महिलाओं की प्रस्थिति में भी निरन्तर परिवर्तन हुआ है। आज महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेवाएँ देकर देश के विकास में अपना योगदान दे रही हैं। वर्तमान में महिलाएँ शैक्षिक, आर्थिक व सामाजिक रूप से आत्म निर्भर बनकर एक सशक्त व्यक्तित्व के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। लेकिन स्वयं को सशक्त व आत्म निर्भर बनाकर विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिनिधित्व करने के साथ-साथ परिवार के उत्तरदायित्वों का निर्वहन करना भी उनके लिए प्राथमिक दायित्व माना जाता रहा है। आज महिलाएँ अपनी इन दोहरी भूमिकाओं के निर्वहन में विभिन्न परिस्थितियों का सामना करती हैं। जिससे उनका शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है। जबकि उसके विपरीत परिवार में किसी सम्बन्ध या कार्य को लेकर उनकी यही निर्णयन क्षमता आत्म विश्वास पूर्ण नजर नहीं आती है। पारिवारिक पक्षों जैसे बच्चों की शिक्षा, वित्तीय निर्णय और निवेश अन्य पारिवारिक निर्णय व सामाजिक पहलुओं से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों पर निर्णय लेने का अधिकार आज भी पुरुषों के पास ही है। बेषक आज उच्च शिक्षा प्राप्त कर विभिन्न क्षेत्रों में अपना वर्चस्व प्रस्तुत कर परिवार को भी आर्थिक मजबूती प्रदान कर रही हैं वहीं परिवार में उनके द्वारा किये गये निर्णय व उनकी उपस्थिति को इतना महत्वपूर्ण नहीं माना जाता है। भारतीय सामाजिक परिदृश्य में तो यह और अधिक स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

सम्बन्धित साहित्य का पुर्नवलोकन

दमयंती सैनी (2024) ने अपने अध्ययन “भारत में कामकाजी महिलाओं की स्थिति का अवलोकन” में यह स्पष्ट किया है कि भारतीय परिवेश में परम्परागत रूप से पले बढ़े होने के कारण महिलाएँ पारिवारिक उत्तरदायित्व स्वयं लेती हैं, क्योंकि भारतीय सामाजिक मान्यताओं के अनुसार महिलाओं को ही परिवार की धुरी माना गया है। परन्तु आज के बदलते परिवेश में जहाँ महिलाएँ उच्च शिक्षा प्राप्त विभिन्न कार्यक्षेत्रों में अपनी भूमिका निभा रही हैं वहीं परिवार व बच्चों की चिंता उसके कामकाज को प्रभावित करती है और उनकी मानसिक स्थिति तनावग्रस्त हो जाती है।

बबीता कुमारी व डॉ० अवधेश रजक (2024) के अध्ययन “कामकाजी महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण – एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण” में उन्होंने बताया है कि कामकाजी महिलाएँ मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से समाज की परम्परागत सामाजिक धारणाओं के कारण आंतरिक संघर्ष, तनाव और असुरक्षा की भावना से ग्रसित हैं।

मौसमीपाल (2022) ने अपने अध्ययन “कामकाजी महिलाओं और तनाव प्रबंधन : एक दृष्टिकोण” के अन्तर्गत यह स्पष्ट किया है कि समाज की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए स्त्री व पुरुष दोनों ही भागीदार हैं। अपने अध्ययन में वह यह भी मानती है कि महिलाओं पर अवश्य की दोहरी जिम्मेदारी है। महिलाएँ शारीरिक दबाव के साथ साथ मानसिक दबाव में भी हैं। कार्यक्षेत्र पर जाते समय उन पर बच्चों को घर के अन्य सदस्यों पर देखभाल के लिए छोड़ने पर वे मानसिक रूप से अपराध बोध से ग्रसित हैं परन्तु वे ये भी मानती हैं कि उनके काम करने से वे अपने बच्चों को बेहतर जीवन जीने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

मुकेश कुमार सैनी (2022) ने अपने किये गये अध्ययन “कामकाजी महिलाएँ एवं भूमिका द्वन्द” में यह स्पष्ट किया है कि कामकाजी महिलाएँ अपनी नौकरी की जिम्मेदारियों के साथ अपनी

पारिवारिक जिम्मेदारियों को भी समान महत्व देती है। वे ये मानती है कि वे अपनी नौकरी से सम्बन्धित कर्तव्य व जिम्मेदारियों को पूरा करने में ईमानदारी से पालन करती है और इसी के साथ यही कामकाजी महिलाएं अपनी पत्नी और मां की भूमिका को भी समान महत्व देती है। इस कारण कभी कभी उन्हें भूमिका द्वन्द का सामना करना पड़ता है।

उपर्युक्त दिये गये अध्ययनों के पुनरावलोकन से यह ज्ञात होता है कि जहां आज महिलाएं विकसित होते हुए भारत में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वहीं उनके समक्ष ऐसी चुनौतियां खड़ी हो गई हैं जहां उन्हें अपनी क्षमता को प्रदर्शित करने के लिए विभिन्न बाधाओं का सामना करना पड़ता है। आज महिलाएं समाज के हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है चाहे वह कोई भी पेशा हो। लेकिन शिक्षण का कार्य ऐसा है जो सदैव ही महिलाओं को आकर्षित करता रहा है क्योंकि इसमें अच्छे वेतन के साथ साथ निश्चित समय होने के कारण वे अपने परिवार को भी समय दे पा रही है। अतः प्रस्तुत अध्ययन हेतु बुलन्दशहर जिले के उच्च शिक्षण संस्थानों अर्थात् महाविद्यालयों में कार्यरत विवाहित महिला प्रवक्ताओं का चयन किया गया। इस अध्ययन का मुख्य कारण यह जानने का प्रयास करना है कि इस क्षेत्र में आने के बाद वे अपने दोहरे दायित्वों का निर्वहन अर्थात् परिवार व कार्यक्षेत्र में इन दोनों भूमिकाओं को निभाने में उनके समक्ष आने वाली चुनौतियां कौन सी हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन के मुख्य रूप से तीन उद्देश्य हैं :-

1. महिला प्रवक्ताओं को पारिवारिक व कार्यक्षेत्र सम्बन्धी भूमिकाओं को निभाने में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।
2. दोहरी भूमिकाओं के कारण उन पर पड़ने वाले शारीरिक, मानसिक व आर्थिक प्रभाव का अध्ययन करना।
3. नौकरी पेशा होते हुए भी पारिवारिक निर्णय लेने में उनकी भूमिका का अध्ययन करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन बुलन्दशहर जिले के उच्च शिक्षण संस्थानों अर्थात् महाविद्यालयों (स्ववित्तपोषित, वित्तपोषित व राजकीय महाविद्यालय) में कार्यरत विवाहित महिला प्रवक्ताओं के अध्ययन पर आधारित है।

शैक्षणिक सत्र 2025-26 में इस अध्ययन हेतु दो राजकीय पाँच वित्तपोषित व दस स्ववित्तपोषित महाविद्यालय में कार्यरत 20 विवाहित महिला प्रवक्ताओं का चयन किया गया।

जिसमें से 02 राजकीय 08 वित्तपोषित व 10 स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों से विवाहित महिला प्रवक्ताओं का चयन दैव निर्देशन व उद्देश्य पूर्ण निर्देशन द्वारा किया गया। अध्ययन में प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया एवम् द्वितीयक स्रोत हेतु विभिन्न शोधपत्रों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं व वेबसाइट का सहयोग लिया गया।

तथ्यों का संकलन

उपर्युक्त शोध अध्ययन हेतु विभिन्न महाविद्यालयों में कार्यरत विवाहित महिला प्रवक्ताओं को अध्ययन हेतु चुना गया। जिनसे प्रश्नोत्तरी/अनुसूची द्वारा तथ्य संकलित किये गये। इस अध्ययन हेतु संकलित किये गये तथ्यों का विवरण निम्नानुसार है।

तालिका संख्या-01: कार्य का प्रकार

महाविद्यालय का प्रकार	संख्या	प्रतिशत (%)
राजकीय महाविद्यालय	02	10
वित्त पोषित महाविद्यालय	08	40
स्ववित्तपोषित महाविद्यालय	10	50
कुल योग	20	100

शोध अध्ययन हेतु बुलन्दशहर जिले के राजकीय महाविद्यालयों से 02, वित्त पोषित महाविद्यालय से 08 व स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों से 10 विवाहित महिला प्रवक्ताओं का तथ्य संकलन हेतु चयन किया गया।

तालिका संख्या-02: परिवार का प्रकार

परिवार का प्रकार	संख्या	प्रतिशत (%)
एकल	10	50
संयुक्त	10	50
कुल योग	20	100

तथ्य संकलन के उपरान्त यह ज्ञात हुआ कि लगभग 50 प्रतिशत अर्थात् 10 महिला प्रवक्ताएं एकल व 50 प्रतिशत अर्थात् 10 महिला प्रवक्ता भी संयुक्त परिवारों में निवास करती हैं।

तालिका संख्या-03: नौकरी के आने का कारण

नौकरी में आने का कारण	संख्या	प्रतिशत (%)
उच्च जीवन स्तर की चाह	00	00
शैक्षिक योग्यता और महत्वाकांक्षा	16	80 प्रतिशत
आर्थिक आवश्यकता	01	05
स्वेच्छा	03	15
कुल योग	20	100

अध्ययन में किये गये तथ्यों के संकलन में यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश महिला प्रवक्ता अपनी शैक्षिक योग्यता के कारण व उच्च शिक्षा में अध्यापन की महत्वाकांक्षा के कारण इस सेवा से जुड़ीं। जबकि कुछ महिला प्रवक्ताओं ने यह माना कि आर्थिक आवश्यकता के साथ साथ उनकी स्वयं की इच्छा भी उनके इस सेवा में आने के लिये महत्वपूर्ण रही।

तालिका संख्या-04: पति की सामाजिक प्रस्थिति

पति की सामाजिक प्रस्थिति	संख्या	प्रतिशत (%)
नौकरीशुदा (सरकारी सेवा)	06	30
नौकरी शुदा (गैर सरकारी सेवा)	04	20
बेरोजगार	02	10
स्वयं का व्यवसाय	06	30
अन्य	02	10
कुल योग	20	100

अध्ययन के समय तथ्य संकलन में यह पाया गया कि 30 प्रतिशत महिला प्रवक्ताओं के पति सरकारी सेवा में हैं जबकि 20 प्रतिशत के गैर सरकारी सेवा में। वहीं 02 प्रतिशत के बेरोजगार व 30

प्रतिशत के स्वयं का व्यवसाय करते हैं व शेष 02 प्रतिशत महिला प्रवक्ताओं के पति अन्य प्रकार से आर्थिकोपार्जन करते हैं। अतः यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश महिला प्रवक्ताओं के पति सरकारी सेवा, गैर सरकारी सेवा व स्वयं के व्यवसाय से जुड़े हैं। अतः स्पष्ट है कि अधिकांश महिला प्रवक्ताओं के पति की सामाजिक प्रस्थिति आर्थिक व सामाजिक रूप से महिला प्रवक्ताओं के समान ही है।

तालिका संख्या-05: पति पत्नी का कार्यस्थल

पति व पत्नी कार्य स्थल	संख्या	प्रतिशत (%)
एक ही नगर क्षेत्र	12	60
अलग अलग नगर क्षेत्र	08	40
राज्य से दूर	00	00
अन्य	00	00
कुल योग	20	100

महिला प्रवक्ताओं के पति व उनके कार्यस्थल संबंधी तथ्य संकलन करने के उपरान्त यह ज्ञात हुआ कि 60 प्रतिशत महिला प्रवक्ताओं के पति उन्हीं के नगर क्षेत्र में कार्य करते हैं, जबकि 40 प्रतिशत महिला प्रवक्ताओं के पति का कार्यस्थल दूर या अलग नगर क्षेत्र है। अतः सामान्यतः सभी महिला प्रवक्ताएं संयुक्त परिवार या एकल परिवार में सामंजस्य स्थापित रखने का कार्य करती हैं।

तालिका संख्या- 06: घरेलू कार्यों में पति की भागेदारी

घरेलू कार्यों में पति की भागेदारी	संख्या	प्रतिशत (%)
हमेश	8	40
कभी-कभी	8	40
बिल्कुल नहीं	4	20
कुल योग	20	100

अध्ययन में संकलित तथ्यों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि 40 प्रतिशत महिला प्रवक्ताओं के पति घरेलू कार्यों में सदैव उनका साथ देते हैं जबकि 40 प्रतिशत यह मानती है कि उनके पति कभी कभी घरेलू कार्यों में तभी उनका सहयोग प्रदान करते हैं, जब कोई समस्या उत्पन्न हो जाये। (जैसे उनका स्वास्थ्य ठीक न होने पर या किसी घरेलू कार्यक्रम के समय) जबकि 20 प्रतिशत महिला प्रवक्ताओं द्वारा यह माना गया के उनके पति घरेलू कार्यों में उनको बिल्कुल भी सहयोग प्रदान नहीं करते हैं। उपर्युक्त तथ्य यह स्पष्ट करता है कि महिला प्रवक्ताओं की उच्च आर्थिक व सामाजिक प्रस्थिति होने पर भी अभी भी कुछ सामाजिक रूढ़िवादिताओं के कारण पति अपनी पत्नी के साथ घरेलू सहयोग करने से बचते हैं, और अपनी पुरुष मानसिकता पर निर्भर हैं। इन सबके अतिरिक्त अब सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के फलस्वरूप महिलाओं के शिक्षित होने व उनके उच्च पदों पर आसीन होने के कारण पुरुषों में उनके प्रति मानसिकता में भी परिवर्तन आया है, जो इस अध्ययन में भी स्पष्ट होता है। जिसमें 40 प्रतिशत महिला प्रवक्ता यह मानती है कि उनके प्रति उनके कार्य का सम्मान करते हैं और सदैव घरेलू कार्यों में उनका सहयोग करते हैं। यह तथ्य यह स्पष्ट करता है कि वर्तमान में यह एक सकारात्मक संकेत है कि

तालिका संख्या-07: अन्य सदस्यों का सहयोग

अन्य सदस्यों का सहयोग	संख्या	प्रतिशत (%)
हमेशा	04	20
कभी कभी	10	50
बिल्कुल नहीं	06	30
कुल योग	20	100

घरेलू कार्यों में पारिवारिक सदस्यों के सहयोग के सम्बन्ध में संकलित तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि 20 प्रतिशत महिला प्रवक्ता यह मानती हैं कि घरेलू कार्यों में परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा उन्हें सदैव सहयोग प्राप्त होता है जबकि 50 प्रतिशत महिला प्रवक्ता यह मानती हैं कि परिवार के अन्य सदस्यों का सहयोग कभी कभी अर्थात् विशेष अवसरों, पारिवारिक समारोहों या उनका स्वास्थ्य ठीक न होने पर ही प्राप्त होता है जबकि 30 प्रतिशत महिला प्रवक्ता यह मानती हैं कि उन्हें परिवार के अन्य सदस्यों का सहयोग बिल्कुल प्राप्त नहीं होता है।

अतः इन तथ्यों के आधार पर स्पष्ट होता है कि जो महिला प्रवक्ताएं राजकीय व वित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत हैं, जिनका वेतन अच्छा है। उन्हें स्ववित्तपोषित महाविद्यालय की प्रवक्ताओं (जिनका वेतन कम है।) की अपेक्षा परिवार में अपेक्षित सहयोग प्राप्त होता है। अतः स्पष्ट होता है कि आर्थिक रूप से सम्पन्न होने की स्थिति में इन्हें परिवार में सम्मान व अपेक्षित सहयोग प्राप्त होता है।

तालिका संख्या-08: सामाजिक गतिविधियों ने सहभागिता

सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता	संख्या	प्रतिशत (%)
हमेशा	08	40
कभी कभी	06	30
बहुत कम	06	30
बिल्कुल नहीं	00	00
कुल योग	20	100

महाविद्यालयों में कार्यरत विवाहित महिला प्रवक्ताओं के अध्ययन में उनकी सामाजिक गतिविधि में सहभागिता के सम्बन्ध में एकत्रित किये गये तथ्यों के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि 40 प्रतिशत महिलाएं अपनी सम्पूर्ण सहभागिता मानती हैं वे यह मानती हैं वे सभी सामाजिक कार्यक्रमों व समारोह में प्रतिभाग कर पाती हैं, जबकि 30 प्रतिशत महिलाएं मानती हैं कि वे कभी कभी ही प्रतिभाग कर पाती हैं जबकि 30 प्रतिशत यह मानती हैं उनकी सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता बहुत कम है। यह आंकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि अधिकांश उत्तरदाता सामाजिक गतिविधियों में कभी कभी या बहुत कम सहभागिता कर पाती हैं। जिसका मुख्य कारण कार्यस्थल व घर के कार्यों के बीच अत्यधिक व्यस्तता का पाया जाना है।

तालिका संख्या-09: बच्चों के पालन पोषण

बच्चों का पालन पोषण	संख्या	प्रतिशत (%)
सभी के सहयोग से	10	50
घरेलू सहायिका द्वारा	05	25
स्वयं के सामंजस्य द्वारा	05	25
कुल योग	20	100

बच्चों के पालन पोषण सम्बन्धी अध्ययन करने पर यह ज्ञात हुआ है कि अधिकांश उत्तरदाता नौकरी पर जाने के कारण बच्चों के पालन पोषण पर पूर्ण समय नहीं दे पाती है लेकिन परिवार के सहयोग से उनके बच्चों का पालन पोषण भली भाँति हुआ। जिसमें परिवार के सभी सदस्यों का योगदान रहा।

जबकि कुछ प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे रहे जिन्होंने यह माना कि वे अपने बच्चों का पालन पोषण घरेलू सहायिका के द्वारा या पति पत्नी स्वयं के सामंजस्य द्वारा करते हैं।

तालिका संख्या-10: स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता

स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता	संख्या	प्रतिशत (%)
पूर्ण रूप से हँ	08	40
आंशिक हँ	12	60
बिल्कुल नहीं	00	00
कुल योग	20	100

महिला प्रवक्ताओं के अध्ययन के समय उनसे संकलित किये गये तथ्यों के अन्तर्गत पूछे गये प्रश्नों में से एक महत्वपूर्ण प्रश्न कि उनकी कार्य घर के बीच सामंजस्य रखने के दौरान उनकी स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति कितनी जागरूकता है। प्रश्न के जवाब में 40 प्रतिशत ने यह माना कि वे अपने स्वास्थ्य के प्रति पूर्ण रूप से जागरूक है जबकि 60 प्रतिशत उत्तरदाता ने इसका उत्तर आंशिक हँ के रूप में दिया। अर्थात् ने कभी तो स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति ध्यान दे पाती है और कभी नहीं पूर्ण रूप से नहीं। दैनिक रूप से अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता सम्भव नहीं है ऐसा उन्होंने माना।

तालिका संख्या-11: अपने पसंद के कार्य के लिये समय निकालना

अपने पसंद के कार्य के लिए समय निकालना	संख्या	प्रतिशत (%)
पूर्ण रूप में हँ	06	30
आंशिक हँ	14	70
बिल्कुल नहीं	00	00
कुल योग	20	100

उपर्युक्त अध्ययन में महिला प्रवक्ताओं से उनके व्यक्तिगत जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों के अध्ययन के सापेक्ष तथ्य संकलन में यह ज्ञात हुआ कि मात्र 30 प्रतिशत महिला प्रवक्ताओं ने यह माना कि ने अपने पसंद के कार्य जैसे-पेटिंग करना, गाने सुनना, कविताएं लिखना, फिल्म देखना या घूमने जाना इत्यादि जैसे कार्य कर पाती है जबकि 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह माना है कि कार्यस्थल व घर के कार्यों की व्यस्तता के कारण वे अपने पसंद के कार्यों के लिए समय कम ही निकाल पाती है। जिसका उनके मानसिक स्वास्थ्य पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। अतः यह तथ्य यह स्पष्ट करता है कि अत्यधिक व्यस्तता उनके व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव डाल रही है। अपने पसंद के कार्य के लिए समय न निकाल पाने उसकी अपेक्षा कार्यस्थल व घरेलू कार्यों के मानसिक दबाव के कारण उनके व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव के साथ साथ मानसिक स्थिति की प्रभावित हुई है।

तालिका संख्या-12: कार्यस्थल व घर के बीच सामंजस्य

कार्यस्थल व परिवार के बीच सामंजस्य	संख्या	प्रतिशत (%)
नहीं हो पाता	01	05
हाँ हो जाता है।	06	30
ठीक से हो जाता है।	13	65
कुल योग	20	100

कार्यस्थल व घर के बीच सामंजस्य की स्थिति का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश उत्तरदाता यह मानती है कि यह थोड़ा मुश्किल होता है और थोड़ी ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है लेकिन दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण सामंजस्य स्थापित हो जाता है। जबकि कुछ उत्तरदाता यह मानती है कि पति व परिवार के सहयोग के कारण आसानी से सामंजस्य स्थापित हो जाता है। मात्र 05 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानती है कि सामंजस्य नहीं हो पाता है और स्वास्थ्य प्रभावित होता है जिसके कारण कार्यस्थल व घर के कार्यों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका संख्या-13: दोहरे कार्य के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव

स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव	संख्या	प्रतिशत (%)
शारीरिक प्रभाव	20	100 प्रतिशत
मानसिक प्रभाव	20	100 प्रतिशत

महिला प्रवक्ताओं से कार्यस्थल व घर के बीच सामंजस्य स्थापित करने के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने पर यह ज्ञात हुआ कि सभी उत्तरदाता यह मानती है कि दोनों क्षेत्रों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने कारण उनके स्वास्थ्य पर अत्याधिक प्रभाव पड़ता है। अत्याधिक दौड़ भाग के कारण अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देने के कारण शारीरिक रूप से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गयी हैं, जबकि कार्यस्थल के कार्यों व घरेलू कार्यों के बीच सामंजस्य स्थापित करने के कारण उनकी मानसिक स्थिति प्रभावित होती है। क्योंकि कार्यस्थल की समस्या घर और घर की समस्या कार्यस्थल पर ले जाने के कारण मानसिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है साथ ही दोनों स्थानों का कार्य भी प्रभावित होता है। अतः दोनों के कारण कार्यशैली व कार्यक्षमता भी प्रभावित होती है। अतः 50 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानती है कि इस प्रकार की स्थिति के कारण उनकी सामाजिक प्रस्थिति प्रभावित होती है।

तालिका संख्या-14: निर्णय लेने में भूमिका

पारिवारिक मुद्दों पर निर्णय लेने में भूमिका	संख्या	प्रतिशत (%)
पूर्ण रूप से	05	25
समान	07	35
आंशिक हाँ	06	30
बिल्कुल नहीं	02	10
कुल योग	20	100

पारिवारिक मुद्दों में उत्तरदाताओं की भूमिका का अध्ययन करने पर यह ज्ञात हुआ कि 25 प्रतिशत महिला प्रवक्ता यह मानती है कि उनकी राय ही सर्वोपरि होती है जबकि 35 प्रतिशत महिला

प्रवक्ता यह मानती है कि उनकी राय उनके पति के समान ही मान्य होती है, जबकि 30 प्रतिशत महिला प्रवक्ता यह मानती है कि पारिवारिक मुद्दों पर कभी कभी उनकी राय ली जाती है। जबकि मात्र 02 प्रतिशत महिला प्रवक्ता यह मानती है कि उन्हें पारिवारिक मुद्दों से दूर रखा जाता है। उनसे कोई राय या इस प्रकार के मुद्दों पर कोई संवाद नहीं किया जाता है। अतः यह तथ्य स्पष्ट करता है कि शिक्षा का आर्थिक रूप से सम्पन्न होने के कारण पारिवारिक मुद्दों पर महिलाओं की राय को महत्व दिया जा रहा है, लेकिन अभी की स्थिति पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं है।

तालिका संख्या-15: सामाजिक मुद्दों पर राय रखने में भूमिका

सामाजिक मुद्दों पर निर्णय राय	संख्या	प्रतिशत (%)
पूर्ण रूप से हाँ	03	15
समान	07	35
आंशिक हाँ	07	35
बिल्कुल नहीं	03	15
कुल योग	20	100

एक अन्य प्रश्न कि परिवार में सामाजिक मुद्दों पर अपनी राय रखने की क्या स्थिति है ? इसके अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि 15 प्रतिशत महिला प्रवक्ता यह मानती है कि विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर उनकी राय को महत्व दिया जाता है जबकि अधिकांश महिला प्रवक्ता इस विषय पर यह मानती है कि उनकी राय मानी जाती है और सभी के समान सुनी जाती है लेकिन महत्व की बात को वो स्पष्ट नहीं कर पाती। जबकि मात्र 15 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानती है सामाजिक मुद्दों पर उनकी राय को महत्व नहीं दिया जाता। जबकि कार्यस्थल पर सामाजिक मुद्दों पर अपनी राय रखने पर सभी उत्तरदाता पुरजोर दृढ़ता से यह मानती है कि वहाँ उनकी राय को अत्याधिक महत्व दिया जाता है। अतः स्पष्ट है कि दोनों क्षेत्रों में एक ही विषय की स्थिति भिन्न भिन्न है। जहाँ परिवार में उनकी प्रस्थिति कार्यस्थल की अपेक्षा द्वितीयक है, वहीं कार्यस्थल पर प्रस्थिति परिवार की अपेक्षा उच्च है।

तालिका संख्या-16: परिवार के आर्थिक मुद्दों पर राय

परिवार के आर्थिक मुद्दों पर राय	संख्या	प्रतिशत (%)
पूर्ण रूप से हाँ	02	10
समान	07	35
आंशिक हाँ	06	30
बिल्कुल नहीं	05	25
कुल योग	20	100

परिवार के आर्थिक मुद्दों पर अपनी राय रखने के सम्बन्ध में पूछे गये प्रश्न के सम्बन्ध में अधिकांश उत्तरदाता यह मानती है कि उनकी राय पति के समान मानी जाती है और किन्हीं स्थितियों में यह स्थिति स्पष्ट नहीं होती जैसे कि कभी मान ली जाती है कभी नहीं मानी जाती है। जबकि 25 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानती है कि मात्र बच्चों के आर्थिक व्यय के सम्बन्ध में ही उनसे राय ली जाती है परिवार के अन्य किसी आर्थिक मुद्दे पर उनकी राय नहीं ली जाती मात्र 10 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानती है कि परिवार के प्रत्येक आर्थिक मुद्दे पर उनसे राय ली जाती है और उसे

महत्व भी दिया जाता है। अतः स्पष्ट है कि महिला प्रवक्ताओं के आर्थिक रूप से सम्पन्न होने पर भी कई बार उनसे परिवार के आर्थिक मुद्दों पर पूर्ण रूप से राय नहीं ली जाती जो कि परिवार में पुरुष प्रधान मानसिकता का अभी भी पाया जाना स्पष्ट करता है। यह तथ्य यह भी स्पष्ट करता है कि यद्यपि उत्तरदाता आर्थिक रूप से सम्पन्न है फिर भी किसी भी आर्थिक व्यय से सम्बन्धित मुद्दों पर आज भी इन्हें स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है।

तालिका संख्या-17: परिवार के बच्चों की शिक्षा सम्बन्धी मुद्दों पर राय

बच्चों की शिक्षा सम्बन्धी मुद्दों पर राय	संख्या	प्रतिशत (%)
पूर्ण रूप से हाँ	19	95
समान	01	05
आंशिक हाँ	00	00
बिल्कुल नहीं	00	00
कुल योग	20	100

बच्चों की शिक्षा सम्बन्धी मुद्दों पर परिवार में उनकी राय के महत्व पर तथ्य संकलन से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश सभी महिला प्रवक्ता यह मानती हैं कि उनके उच्च शिक्षित होने के कारण परिवार में बच्चों की शिक्षा सम्बन्धी मुद्दों पर उनकी राय अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जाती है और उनकी राय को महत्व देते हुए कार्य रूप में भी लिया जाता है। यहां यह भी महत्वपूर्ण है कि परिवार में उनके उच्च शिक्षित होने के कारण उनका महत्व बढ़ जाता है। मात्र 05 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानती हैं कि इस सम्बन्ध में उनकी राय नहीं ली जाती। अगर सुनी भी जाती है तो उसे इतना महत्व नहीं दिया जाता, यह निर्णय केवल पति द्वारा ही लिया जाता है। अतः तथ्य से स्पष्ट है कि जहाँ आर्थिक मुद्दों पर उत्तरदाताओं का मत अभी भी स्पष्ट नहीं है वहीं बच्चों की शिक्षा सम्बन्धी मुद्दों पर उनकी राय अति महत्वपूर्ण है। यह प्रदर्शित करता है परिवार उनकी शिक्षा को तो महत्व देता है और उनकी राय को महत्वपूर्ण माना जाता है।

तालिका संख्या-18: दोनों कार्यक्षेत्रों से संतुष्टि

दोनों कार्यक्षेत्रों से संतुष्टि	संख्या	प्रतिशत (%)
हाँ	16	80
आंशिक हाँ	04	20
नहीं	00	00
कुल योग	20	100

तथ्य संकलन में उत्तरदाता महिला प्रवक्ताओं से यह भी जानने का प्रयास किया गया कि वे अपने दोनों कार्य क्षेत्रों (कार्यस्थल व घर) के बीच संतुष्ट हैं या नहीं। इस सम्बन्ध में अधिकांश उत्तरदाता यह मानती हैं कि वे दोनों कार्य क्षेत्रों में सामाजिक स्थापित कर संतुष्ट हैं। जिसके लिए उन्हें शारीरिक या मानसिक परेशानी का सामाना करना पड़ता है। लेकिन फिर भी वे संतुष्ट हैं। वे मानती हैं कि इस कारण वे घर की जिम्मेदारी से अलग सामाजिक गतिविधियों से जुड़कर अपना अलग व्यक्तित्व बनाये रखती हैं। जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य सकारात्मक उर्जा से परिपूर्ण रहता है। मात्र 20 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानती हैं कि वे कई बार शारीरिक व मानसिक थकान का अनुभव

करती है। यदि परिवार या पति का सहयोग मिल जाये तो यह और बेहतर हो सकता है। अन्यथा वे दोनों कार्यक्षेत्रों से संतुष्ट है।

तथ्यों का विश्लेषण

कामकाजी महिलाओं और निर्णयन क्षमता के इस समाजशास्त्रीय अध्ययन में जिला बुलन्दशहर में राजकीय, वित्त पोषित व स्ववित्तपोषित महिला प्रवक्ताओं के अध्ययन में यह पाया कि अधिकांश उत्तरदाता यह मानती है कि वे इस कार्य क्षेत्र में अपनी उच्च शिक्षा व महत्वाकांक्षा के कारण आयीं। जिसमें 50 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवार में जबकि 50 प्रतिशत एकल परिवारों रहती है। कुछ उत्तरदाताओं के पति सरकारी सेवा में हैं जबकि कुछ के गैर सरकारी में व कुछ स्वयं का व्यवसाय करते हैं। अधिकांश के पति का कार्यस्थल एक ही नगर क्षेत्र है जबकि कुछ का दूर नगर क्षेत्रों में अधिकांश उत्तरदाता यह भी मानती है कि उनके पति कभी कभी घरेलू कार्यों पर उनकी मदद करते हैं। परिवार के अन्य सदस्यों का सहयोग भी कभी कभी आवश्यकता पड़ने पर प्राप्त होता है। कार्य करने के कारण कुछ उत्तरदाता यह मानती है वे सामाजिक कार्यक्रमों में कम सहभागी हो पाती हैं जबकि केवल कुछ ही मानती है कि वे सम्पूर्ण रूप से सहभागी होती हैं। कार्य की अधिकता अर्थात् कार्यस्थल व घर के बीच सामाज्य स्थापित करने के कारण उन्हें बहुत सामाजिक कार्यक्रमों में सहभागिता हेतु बहुत कम समय मिल पाता है। उत्तरदाताओं ने यह भी माना कि दोनों कार्यक्षेत्रों के सामाज्य स्थापित करने के कारण शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जिसके लिये वे समय नहीं निकाल पाती।

उनकी प्रस्थिति के कारण निर्णयन क्षमता सम्बन्धी तथ्यों के संकलन पर यह ज्ञात हुआ है कि उच्च शिक्षित होने के कारण परिवार में बच्चों की शिक्षा सम्बन्धी निर्णयों में उनकी राय को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। वहीं आर्थिक व सामाजिक मुद्दों पर यह स्थिति भिन्न भिन्न है। वहाँ परिवार के आर्थिक मुद्दों पर उनकी राय नहीं ली जाती है। वहाँ उनके बच्चों की शिक्षा सम्बन्धित मुद्दों पर उनसे राय ली जाती है। कुछ उत्तरदाता यह भी मानती है उच्च पदों पर आसीन होने पर परिवार में सामाजिक मुद्दों पर उनकी रखी गयी राय को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना कि कार्यस्थल पर अतः इस तथ्य से यह स्पष्ट होता है कि आज भी भारतीय परिवारों में पुरुष प्रधान मानसिकता अभी भी कही न कही किसी न किसी रूप में कम या अधिक व्याप्त है। ये महिला प्रवक्ताएं जहाँ आज कार्यस्थल पर सभी निर्णय आत्मविश्वास से लेती हैं, वही परिवार में उनकी स्थिति कुछ भिन्न है। लेकिन ऐसी परिस्थिति में अधिकांश उत्तरदाता यही मानती है कि वे अपने दोनों कार्यक्षेत्रों से संतुष्ट हैं।

निष्कर्ष

भारतीय समाज में महिलाओं की प्रस्थिति प्राचीन काल से वर्तमान आधुनिक काल तक समयानुसार परिवर्तित होती रही है। प्राचीन काल में जहाँ उन्हें समाज में अत्यधिक सम्मान व समानता का अधिकार प्राप्त था। वही मध्यकाल तक आते अति उनके अधिकारों का हनन हो गया। प्राचीन काल में जहाँ विभिन्न विदुषी महिलाएं जैसे गार्गी, मैत्रेयी, अपाला आदि हुईं वहीं बाद में समाज द्वारा महिला शिक्षा पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। लेकिन समयान्तराल पर समाज में पुनः महिला

शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित किया गया और वर्तमान में महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति के आयाम छू रही हैं। लेकिन इस सब के साथ कही न कहीं आज भी समाज में पुरुष प्रधान मानसिकता दृष्टिगोचर होती है। इस अध्ययन में यही जानने का प्रयास किया गया कि महिलाएं उच्च पदों पर आसीन होने के कारण अपने कार्य क्षेत्र में आत्म विश्वास से महत्वपूर्ण निर्णय ले पाती हैं वहीं उनकी पारिवारिक क्षेत्र में क्या स्थिति है।

इस अध्ययन के विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि आज जहाँ महिलाएं उच्च शिक्षा योग्यता के कारण अपनी क्षमता को प्रदर्शित करके उच्च पदों पर आसीन होकर अपने सपनों को पूर्ण कर रही हैं और प्रत्येक क्षेत्र में आत्मविश्वास पूर्ण निर्णय लेती नजर आती हैं। वहीं परिवार में अपनी संतान की शिक्षा के सम्बन्ध में निर्णय लेने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही हैं जबकि आज भी परिवार के आर्थिक व अन्य मुद्दों पर उनकी राय की अपेक्षा नहीं की जाती।

अतः भारतीय समाजों में आज भी कुछ न कुछ कम या अधिक पुरुष प्रधान मानसिकता दृष्टिगोचर होती है। जहाँ आज भी उच्च शिक्षित महिलाएं कार्यक्षेत्र व परिवार के मध्य सामंजस्य स्थापित कर अपने अस्तित्व के लिए निरन्तर प्रयासरत हैं और अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति समाज में प्रदर्शित कर रही हैं, लेकिन उसके उपरान्त भी पारिवारिक उत्तरदायित्वों में परिवारजनों का आंशिक सहयोग भी यह स्पष्ट करता है कि परिवार में उनकी प्रस्थिति उतनी भी निम्न नहीं है। अब समाज की संरचना में परिवर्तन की प्रक्रिया का दौर शुरू हो गया है लेकिन मात्र सामाजिक संरचना के बदलाव की नहीं अपितु मानसिक विचारधारा में बदलाव की आवश्यकता है।

अतः आवश्यकता है। इस बात की है कि पुरुषों को आज अपनी पुरुष मानसिकता त्यागकर उन्हें अपनी अनुगामिनी न मानकर सहगामिनी मानना होगा। साथ ही महिलाओं को भी स्वयं के अस्तित्व को पहचानना होगा और अपनी महत्वपूर्ण प्रस्थिति समाज में स्थापित करनी होगी। यही भारतीय समाज के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होगा।

सन्दर्भ

1. आहुजा, राम: (2011): “सामाजिक समस्याएं” रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
2. निशा: (2023): “भारतीय समाज में लैंगिक असमानता” International Journal of Humanities and Social Sciences Research, Vol. 09, Issue-3, 2023, Pg. **21-23**.
3. कुमार डॉ० हरेन्द्र, डॉ०, कुमार, डॉ० जितेन्द्र: (2024): “स्वतंत्रोत्तर भारत में महिला स्वाधीनता: एक व्यवहारिक विमर्श”, जे०टी०सी० पब्लिकेशन, दिल्ली।
4. सैनी, मुकेश कुमार, “कामकाजी महिलाएं एवं भूमि द्वंद”, Journal of Modern Management and Entrepreneurship, Vol.12, No. 01, 2022, Pg. **201-206**
5. लवानिया, एम०एम०, (2017): “भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र”, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर पृ०सं०—**133**
6. आहुजा, राम: 2000: “भारतीय समाज” रावत पब्लिकेशन, जयपुर।

7. सैनी, दमयंती, (2024): “भारत में कामकाजी महिलाओं की स्थिति का अवलोकन” “International Journal for Reseach Trens and Innovation”, (IJRTI) June 2024, Vol.09, Issue - 6, Pg. **504-506**
8. कुमारी, बबीता, रजक, डॉ० अवधेश: (2024): कामकाजी महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण – एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण” “Journal of Emerging Technologies and Innovative Research” (JETIR), Vol.11, Issue - 11, November - 2024 Pg. **840-846**
9. पाल मौसमी, (2024): ‘कामकाजी महिलाएं और तनाव प्रबन्धन’ “International Journal of Applied Research”, (IJAR), May-2023, Pg. **207-210**